आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-122 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | जून 2024 | मूल्य - 5 रूपए

बढ़ती गर्मी के प्रकोप से बचने के लिए सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने बताये महत्वपूर्ण उपाय

रिपोर्टर-काजल, राज किशोर, सरिता, किशन

आज गर्मी के तापमान का असर भारत के हर एक कोने में व्याप्त है और गर्मी के कारण हर कोई अनेक समस्याओं से जूझ रहे हैं फिर चाहे वह बड़े हो या बच्चे। इस हाल में आप तो अंदाजा लगा ही सकते हैं की सड़कों के किनारे या सिगनल के नजदीक अनेक परिवार ऐसे रहते हैं जिनके सर पर छाया जैसी कोई सुविधा मौजूद नहीं है। जिनके सिर के ऊपर छत, रहने के लिए कमरा या अपना खुद का घर जैसी सुविधा उपलब्ध है वह भी जैसे-तैसे कर इस गर्मी की परेशानी का सामना कर पा रहे हैं परंतु जो सड़कों पर रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चे हैं उनकी स्थिति बहुत ही नाजुक है। इस बढ़ती गर्मी से बचने के लिए सड़क एवं कामकाजी बच्चे क्या उपाय कर रहे हैं? यह जानने के लिए बालकनामा के पत्रकारों ने विभिन्न समुदायों एवं स्थानों पर जाकर उनसे से बातचीत की और यह जानने का प्रयास किया की इस दौरान वे गर्मी से स्वयं के बचाव के लिए क्या-क्या नए तरीके अजमा रहे हैं। नोएडा चारमूर्ति के नजदीक झुग्गी बस्तियों में रह रहे कामकाजी बच्चों से बात की तो 13 वर्षीय बालक गोलू (परिवर्तित नाम) ने बताया की इस बस्ती में हम अपने माता-पिता के साथ रहते हैं और हमारे माता-पिता कबाड़ा बीनने और कबाड़ा छाँटने का काम करते हैं। हमारे माता-पिता सुबह से ही आसपास की बिल्डिंगों में और सड़कों पर कबाड़ा लेने के लिए चले जाते हैं। गोलू ने बताया कि वर्तमान में गर्मी इतनी तेज पड़ रही है की जब हम अपना कबाड़ा छाँटने का काम कर रहे होते हैं तो पसीना रुकने का नाम ही नहीं लेता है जिसके कारण गर्मी काफी तेज लगने लगती है और काम करने में मन नहीं लगता। यद्यपि गर्मी से बचने के लिए हम कुछ नए तरीके आजमाते हैं जैसे कबाड़े के अंदर कई बार विभिन्न प्रकार की खराब बैटरी, मोटर, पंखुड़ियां व तार आदि निकलते हैं तो हम इन सभी वस्तुओं को छाँटते है और जो सही निकल जाती उसको इस्तेमाल कर लेते है और इन सभी चीजों को मिलाकर एक बड़ा पंखा और छोटा पंखा बनाते है जिससे हमें हवा मिलती है। जयपुर में रहने वाले 16 वर्षीय अजय (परिवर्तित नाम) ने बताया की इस बढ़ती गर्मी में हर किसी को बिजली की आवश्यकता होती है और हमारी बस्ती में कभी-कभी ऐसा भी होता है कि 2 से 3 दिन लगातार बिजली चली जाती है या दिन में कभी भी बिजली जाती है तो हमें काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। रात के समय जब बिजली चली जाती है तो हम बड़े बच्चे तो गर्मी को सहन करने की थोड़ी-बहुत शक्ति रखते हैं परंतु जो छोटे-छोटे बच्चे या नवजात शिशु हैं वे गर्मी को सहन नहीं कर पाते हैं। पूरे दिन अधिकतर गर्मी का प्रभाव रहता है परंतु शाम के समय भी तापमान कम होने के बावजूद गर्मी अपना असर दिखाती है और रात के समय गर्मी का तापमान जहां 28-29 डिग्री होना चाहिए वहां 37-38 डिग्री रहता है। हमारे यहाँ कुछ पेड़ मौजूद हैं चाहे उस पेड़ के पास हवा ना आए परंतु थोड़ी राहत अवश्य मिलती है और हम धीरे-धीरे सांस ले पाते हैं एवं इस कारण रात में वहीं पर सोते भी हैं। दिन में जब बिजली नहीं आती तो तब भी पेड़ ही हमारा एक मात्र सहारा रहते है। गुरुग्राम के वजीराबाद सेक्टर 52 में रहने वाले सुमित (परिवर्तित नाम) ने बताया की हम वजीराबाद में अपने माता-पिता के साथ किराए के कमरों में रहते हैं। हमारे घरों में चार सदस्य हैं एक भाई और माता-पिता, हमारी

माताजी दूसरों के घरों में झाड़ू-पोछा लगाने का कामकाज करती है। पिताजी हाउसकीपिंग का काम करते हैं अर्थात होटल में कार्य करने के लिए जाते हैं और बहन घर पर रहती है। हम स्कूल जाते हैं और स्कूल से आने के बाद घर पर पढ़ाई करते हैं। दोपहर के 3:00 से लेकर 4:00 बजे तक ट्यूशन जाते हैं, वैसे हम प्रतिदिन स्कूल और ट्यूशन जाते हैं। हमारे पिताजी मुश्किल से प्रतिमाह 8000 रुपए कमाते है और माताजी महीने के 6000 रुपए कमा लेती है। हालाँकि इन पैसों से गुजारा नहीं हो पाता इस कारण हमारे माता-पिता बस मुझे ही पढ़ाते हैं जबकि मेरी छोटी बहन नहीं पढ़ पाती है क्योंकि इस आमदनी का पैसा तो हमारे कमरे का किराया और राशन में ही चला जाता है जिससे कि हमारे पिताजी के पास कुछ पैसे नहीं बचते हैं, इसीलिए हमारे पिताजी बस मुझे ही पढ़ाते हैं। वर्तमान में जब हम घर से निकलते हैं तो इतनी तेज धूप होने के कारण शरीर जलने लगता है तो फिर ऐसा लगता है कि जैसे पूरा शरीर ही जल जाएगा और इस कारण शरीर पूरे पसीने से तरबतर हो जाता है। जब हम ट्यूशन जाते हैं तो हमें काफी दूर ट्यूशन जाना पड़ता है जिससे कि हमें बहुत ही ज्यादा धूप लगती है इसलिए मैं जब भी ट्यूशन जाता हूँ तो छाया में जाकर खुद का थोड़ा-बहुत बचाव कर लेता हूँ। बढ़ती गर्मी ने इतना कहर मचा रखा है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चे गर्मी से बचने के लिए नए-नए तरीके आजमा रहे हैं दिल्ली शिवाजी पार्क के नजदीक बस्तियों में रह रहे राजू (परिवर्तित नाम) से बात करने के दौरान राजू ने बताया की गर्मी के बारे में बात करें तो गर्मी से हर किसी का बुरा हाल है। हम बच्चे अपनी बस्ती में रहते हैं, हमारी बस्ती टिन शेड से बनी हुई है। यहाँ सुबह के समय गर्मी का तापमान कुछ मात्रा में ठीक रहता है परंतु 10:00 के बाद गर्मी का तापमान बढ़ जाता है और हम बच्चों को बस्ती में रहने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। धूप का असर टिन शेड के ऊपर पड़ता है और हम बच्चे घर से बाहर निकल कर भी कहीं नहीं जा सकते, आप सोच रहे होंगे कि आसपास में पेड़ के पास तो जा सकते हैं, परंतु हमारे नजदीक छाँयादार पेड़-पौधों जैसी कोई सुविधा नहीं है और इस कारण टिन की छत के ऊपर घर में जो पुराने गद्दे हो जाते हैं उन्हें टिन के ऊपर डालकर एवं उनके ऊपर पानी डालकर और साड़ी या चुन्नी आदि गीली कर के फिर आराम से घर का अन्य कार्य करते हैं जिससे गर्मी का असर कम लगता है। जयपुर में रह रहे गौतम (परिवर्तित नाम) ने बताया कि गर्मी के कारण कार्य करने का मन नहीं करता है, हमारा कार्य है कि हम अपने माता-पिता के साथ कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं परंतु अब दोपहर में गर्मी का तापमान इतना बढ़ जाता है कि घर से बाहर निकलने का मन ही नहीं करता, इस कारण अब इस परेशानी से बचने के लिए सुबह 5:00 बजे से लेकर 9:00 तक कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं। बालकनामा पत्रकार दिल्ली के लाल किला के नजदीक दौरा कर रहे थे और तब खिलौने बेचते हुए एक बालक से बात की तो बालक ने कहा की हम खिलौने बगल के सदर बाजार से खरीद के लाते हैं और इस स्थान की रेड सिगनल लाइट पर आकर बेचते हैं। हम यहाँ की सिगनल लाइट के पास ही रहते हैं, वर्तमान में गर्मी इतनी हो रही है कि गर्मी के कारण पसीना अधिक आता है और इस कारण पसीने को बार-बार पोंछते हैं जिस कारण कपड़े में से बदबू आने लगती है। अधिकतर पसीना आने के कारण बार-बार खुजाते हैं, इस कारण अधिकतर शरीर पर फोड़े-फुंसी भी हो जाते हैं। पत्रकारों ने यह भी देखा कि उस बालक के शरीर पर फोड़े-फुंसी हो रखे थे तब भी

शेष पृष्ठ 5 पर

कचरे से कलम तक: नवीन की प्रेरक उड़ान

बातूनी रिपोर्टरः नोलेश

पश्चिम दिल्ली के शिवाजी पार्क की झुग्गी में रहने वाले 14 वर्षीय बालक नवीन (परिवर्तित नाम) की कहानी बदलाव की एक प्रेरणादायक गाथा है। एक समय पर नवीन को अपना दिन कचरा बीनने में बिताना पड़ता था, लेकिन अब वह स्कूल में दाखिला ले चुका है, इसका श्रेय चेतना एनजीओ और चाइल्ड वेलफेयर कमेटी के अथक प्रयासों को जाता है। दो साल पहले नवीन की यात्रा तब शुरू हुई थी जब चेतना संस्था के कार्यकताओं ने उसे कचरा बीनते हुए पाया था, बिना किसी आधिकारिक पहचान या शिक्षा तक पहुंच के एवं बिना आधार कार्ड और बैंक खाता के, नवीन का भविष्य अंधकारमय दिख रहा था। हालांकि, चेतना संस्था की समर्पित टीम ने उस पर हार नहीं मानी अतः लगातार प्रयासों के बाद, नवीन को अंततः आधार कार्ड और बैंक खाता मिला, जिससे उसके स्कूल में दाखिले का रास्ता साफ हुआ। गर्व से चमकते हुए, नवीन ने अपनी कहानी साझा की, "मैंने कभी नहीं सोचा था कि

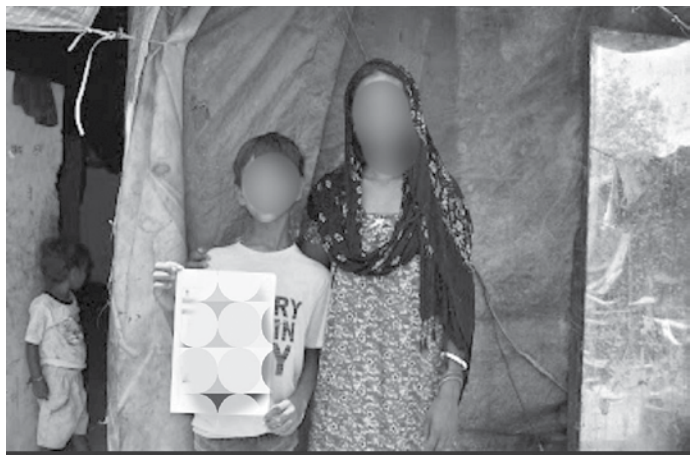

मैं वर्दी पहनूंगा और कचरे के थैले की जगह किताब पकडूंगा। मैं चेतना एनजीओ और चाइल्ड वेलफेयर कमेटी का आभारी हूं कि उन्होंने मुझ पर विश्वास किया।" नवीन का परिवर्तन दृढ़ संकल्प की शक्ति और सामुदायिक प्रयासों के प्रभाव का प्रमाण है। जैसे ही वह अपने जीवन के इस नए अध्याय की शुरूआत कर रहा है, नवीन की कहानी आशा और दृढ़ता को प्रेरित करती है, हमें यह याद दिलाते हुए कि हर बच्चे को सम्पूर्ण विकास का मौका मिलना चाहिए।

नई सड़क निर्माण से बस्ती में हुआ संरचनात्मक सुधार, बच्चों में छाई खुशी की लहर

बातूनी रिपोर्टर - सरताज
बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

दिल्ली के अमर पार्क इलाके की झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चे काफी खुश हैं क्योंकि नई सड़क निर्माण से उनके इलाके में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। एक समय में खस्ताहाल गड्ढों और कूड़े से भरी हुई सड़कें अब एक सुव्यवस्थित मार्ग में तब्दील हो गई है, जिसने निवासियों, खासकर बच्चों के जीवन को आसान बना दिया है। अमर पार्क क्षेत्र के बातूनी रिपोर्टर सरताज ने बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार को इलाके की विजिट के दौरान अपनी खुशी साझा करते हुए कहा कि नई सड़क ने उनके रोजमर्रा की जिंदगी में बहुत बड़ा बदलाव किया है। सरताज ने कहा, "पहले, यहाँ की सड़क बहुत खराब थी, और हमें हर बार बाहर निकलने पर गड्ढों और गंदगी से गुजरना पड़ता था। लेकिन अब, नई सड़क निर्माण की बदौलत, यह सब बदल गया है।"

नई सड़क निर्माण द्वारा लाया गया एक बड़ा सुधार उस खुले नाले को ढंकना है जो पहले इलाके से होकर गुजरता था। नाले से आने वाली दुर्गंध से आस-पास का माहौल असहनीय हो जाता था, लेकिन अब, नाले को ढकने के बाद, बदबू की कोई समस्या नहीं है। बच्चों के पास अब खेलने के लिए पर्याप्त जगह है, बिना इस चिंता के कि खुली नाली उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिए खतरा बन सकती है। इसके अलावा, इलाके को साफ रखने के प्रयास भी सराहनीय रहे हैं। पहले, सड़क पर कूड़ा बिखरा रहता था, जिससे निवासियों को परेशानी होती थी। सरताज ने बताया कि लोग अक्सर कचरे को सड़क पर फेंक देते थे, जिससे गंदगी और बढ़ जाती थी।

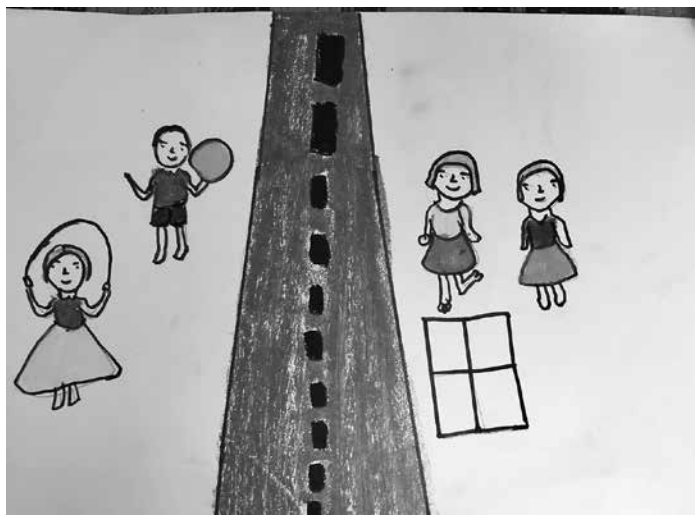

हालांकि, नियमित कचरे को साफ सफाई सेवाओं की शुरूआत के साथ, सड़कें अब साफ और कूड़े से मुक्त हैं। अब कूड़ा उठाने वाली गाड़ी रोजाना इलाके की सफाई करने आती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि क्षेत्र सभी के लिए साफ और स्वच्छ वातावरण बना रहे। अमर पार्क के बच्चे नई सड़क के निर्माण से विशेष रूप से खुश हैं, क्योंकि अब उनके पास खेलने और मौज-मस्ती करने के लिए अधिक जगह है। पहले सीमित खेल क्षेत्र का विस्तार किया गया है, जिससे बच्चे बिना किसी बाधा के स्वतंत्र रूप से इधर-उधर दौड़ सकते हैं। सड़क पर गड्ढे और मलबा न होने से बच्चों के लिए बाहर खेलना सुरक्षित हो गया है, जिससे वे बहुत खुश हैं। कुल मिलाकर, अमर पार्क में नई सड़क के निर्माण से निवासियों, खासकर बच्चों में खुशी और संतुष्टि की भावना आई है। बेहतर बुनियादी ढांचे, स्वच्छ परिवेश और बेहतर खेल क्षेत्र ने उनके इलाके को रहने के लिए बेहतर स्थान बना दिया है। निवासी नई सड़क निर्माण से लाए गए सकारात्मक बदलावों के लिए आभारी हैं, और वे और अधिक विकास की आशा करते हैं जो उनके जीवन की गुणवत्ता को और बेहतर बनाएगा।

अपहरण की संभावना को भांप, बच्चों ने बचाई स्वयं की जान

रिपोर्टरः सुफियान शमशाद खान

पश्चिमी दिल्ली में स्थित जखीरा समुदाय के बच्चे आज भी सार्वजनिक स्थानों पर सुरक्षित नहीं है। जखीरा में स्थित झुग्गियों में से तीन बच्चे एक दिन अपने अभिभावकों के काम से कुछ सामान लेने के लिए इंद्रलोक क्षेत्र की ओर जा रहे थे। असलम (परिवर्तित नाम)13 वर्षीय अपने अन्य दोस्त इस्ताक (परिवर्तित नाम) 10 वर्षीय और सोनू (परिवर्तित नाम) 11 वर्षीय यह तीनों बच्चे अपने माता-पिता का कुछ सामान लेने के लिए इंद्रलोक जा रहे थे की तभी जब यह पुल के नीचे जा रहे थे तो अचानक से एक कार पीछे से आई और इन बच्चों का धीरे-धीरे पीछा करने लगी, इन बच्चों को बहुत समय तक तो यह पता ही नहीं चला कि कार में बैठा व्यक्ति इनका पीछा कर रहा था अर्थात वह उनके अपहरण की फिराक में था। ये सभी आपस में एक साथ हंसी मजाक करते हुए चल रहे थे तब उनको बिल्कुल भी एहसास नहीं हुआ कि उन बच्चों का अपहरण भी हो सकता है। फिर कुछ देर बाद कार में बैठे व्यक्ति ने उन बच्चों को आवाज दी और कहा कि इधर आओ, फिर पूछा की तुम लोग कहां जा रहे हो? मैं तुम्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर छोड़ देता हूँ, उस समय ये तीनों बच्चे उस व्यक्ति का इशारा नहीं समझे थे और उसको देखकर हंसने लगे और हंसी में टालते हुए कहा नहीं अंकल हम अपने आप से चले जाएंगे और बच्चों ने उन अंकल को थैंक्स भी बोला और कहा आप अपने काम पर चले जाइए हम जहां जा रहे हैं हमें रास्ता पता है। परंतु इन बच्चों की इन बातों का उस व्यक्ति पर कोई असर नहीं हुआ और वह फिर भी लगातार

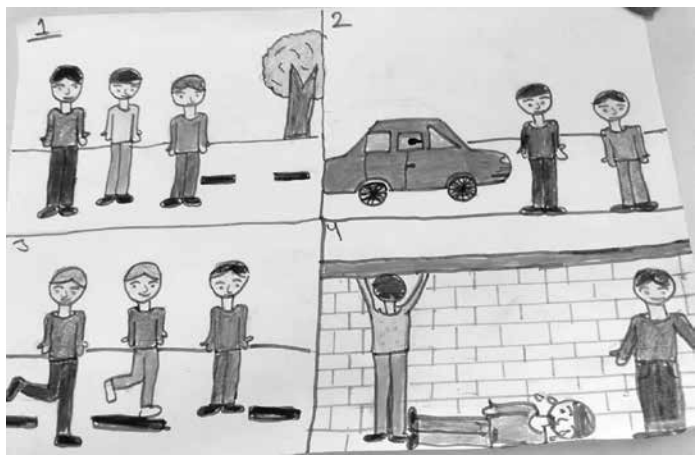

धीरे-धीरे बच्चों के पीछे गाड़ी लेकर आ रहा था, तब इनमें से 10 वर्षीय इस्ताक ने यह बात महसूस कि, की यह व्यक्ति बहुत देर से हमारा पीछा कर रहा है और गाड़ी भी बहुत धीमी गति से चला रहा है। तो उसने अपने साथियों को बताया कि यह गाड़ी वाले अंकल अभी आगे नहीं जा रहे हैं और गाड़ी बहुत धीरे चला रहे हैं और हमें लगता है की यह हमें पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं। हालाँकि अन्य बच्चों को इस बात का कोई फर्क नहीं पड़ा और दोनों बच्चे हंसने लगे, फिर वह जो व्यक्ति गाड़ी चला रहा था उसने बच्चों के आगे हाथ रोक करके दोबारा से कहा की आओ मैं तुम्हें गाड़ी से छोड़ देता हूं, कहां जाना है? उन बच्चों ने दोबारा से मना कर दिया। अब की बार तीनों बच्चे थोड़ा घबरा गए थे क्योंकि वह व्यक्ति इन बच्चों को आंखें दिखा कर बात कर रहा था और थप्पड़ भी दिखा रहा था जिससे यह बच्चे सहम गए और इन्होंने अपने चलने की स्पीड बहुत तेज कर ली। वहीं गाड़ी वाला व्यक्ति भी बहुत तेज था उसने भी अपनी गाड़ी की स्पीड बहुत तेज कर ली और बच्चों के पीछे गाड़ी चलाता रहा। अब इन बच्चों को डर लग रहा था कि अगर इस गाड़ी में अंकल के साथ यदि दो चार व्यक्ति और पीछे बैठे होंगे तो हो सकता है यह लोग हमें जबरदस्ती गाड़ी के अंदर खींच ले और हमारा अपहरण करके हमें कहीं ले जाएं। तभी सुफियान ने ये सब देख कर कहा कि मुझे यह गाड़ी वाले अंकल चोर लग रहे हैं जो बच्चों को चुरा कर बेच देते हैं तो इन तीनों बच्चों ने क्या किया की एकदम से तेज दौड़ लगा दी और बच्चे बहुत तेजी से दौड़ने लगे तभी यह बच्चे पुल के नीचे पहुंचे। वहां पर एक दीवार थी, तीनों बच्चे दीवार पर चढ़ गए और दीवार के सहायता से दूसरी तरफ कूद गए जिससे यह अपने क्षेत्र में आ गए परंतु तभी 10 वर्षीय इस्ताक जल्दी से नहीं कूद पा रहा था अतः वह दीवार पर से गिर गया और उसके हाथ में चोट लग गई। सुफियान ने उन बच्चों की मदद की और उसने अपने दोस्तों को उठाया और दोनों तीनों बच्चे हाथ पकड़ कर भागने लगे, वहां पर एक औरत बैठी थी तो सुफियान ने आप बीती उस महिलाको बताई और उस महिला ने उन बच्चों की मदद की और कहा कि तुम लोग घबराओ मत, मैं तुम्हारी मदद करूंगी वह औरत उन तीनों बच्चों को लेकर वहां गई परंतु उसने देखा कि वहां पर कोई गाड़ी वाला व्यक्ति नहीं था अर्थात वह गाड़ीवाला व्यक्ति जा चुका था, कुलमिलाकर बच्चों ने अपने साहस का परिचय दिया और अपनी जान बचाकर वापस अपने घर के लिए आ गए।

कामकाजी बच्चों ने नहीं मानी हार, स्कूल जाने के लिए किया हर बाधा को पार

बालकनामा रिपोर्टरः काजल,ढ
ाातूनी रिपोर्टरः सोनिया

हम सभी जानते है की जब मेहनत और लगन का सही मिश्रण हो तो सपनो को साकार करने से कोई नहीं रोक सकता लेकिन जीवन में सफलता पाने का रास्ता बहुत ही कठिन होता है अगर बीच में थोड़ी सी भी नकारात्मक बातें आ जाती है तो हम रास्ता भटक जाते हैं परिणामतः आगे बढ़ने का हौसला टूट जाता है। इसके इतर अगर हम सकारात्मक सोचते हैं, तो हम जीवन में आगे प्रगति कर सकते हैं। ऐसी ही एक झलक जयपुर की जामडोली कच्ची बस्ती के सड़क एवं कामकाजी बच्चों में देखने को मिली, जामडोली कच्ची बस्ती के बातूनी रिपोर्टर सोनिया ने बताया की 'हमारा जब विद्यालय में एडमिशन हुआ तो हम बहुत खुश हुए लेकिन हमारा विद्यालय बस्ती से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर था। इतनी

दूर हम बच्चों को पैदल जाने में अक्सर समस्या आती, लेकिन उस समय हमारे माता-पिता ने हमारा सहयोग किया और हमारे लिए रिक्शा / टैक्सी की व्यवस्था की।' दुर्भाग्यवश यह व्यवस्था कुछ ही महीने तक चल पाई और पैसों की कमी के कारण हमारा रिक्शा हटा दिया गया लेकिन सभी बच्चों को विद्यालय जाना और पढ़ाई करना अच्छा लगने लगा था एवं सबके अलग-अलग सपने थे। फिर इस प्रकार हम बच्चों ने एक योजना बनाई और बस्ती के सभी बच्चे इकट्ठा होकर प्रतिदिन एक साथ विद्यालय पैदल-पैदल जाने लगे और विद्यालय से एक साथ वापस आते इससे हमें पता भी नहीं चल पाता था और हम खिलखिलाते हुए बातें करते हुए कब हम विद्यालय पहुंच जाते थे। हम सभी बच्चों ने बहुत मेहनत और लगन के साथ अपनी समस्या का सामना किया और इस वर्ष हमारी बस्ती के लगभग 30 बच्चे अच्छे नंबरों से विभिन्न कक्षाओं से पास हुए और अब हम अगली कक्षा में चले गए हैं। बालिका सोनिया बताती है कि हम बहुत खुश है कि इतनी समस्याओं के बावजूद भी हमने हिम्मत नहीं हारी और अपने सपनों को पूरा करने के लिए सबने मिलकर एक साथ प्रयास किया।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बालिका ने की जमकर पढ़ाई, बोर्ड परीक्षा के परिणाम जानने को उत्साहित

बालक नाम रिपोर्टरः काजल,
बातूनी रिपोर्टरः स्नेहा

बालकनामा रिपोर्टर काजल द्वारा जयपुर के मांग्यावास बस्ती दौरे के दौरान पता चला कि बालिका स्नेहा (13 वर्ष) ने अभी हाल ही में आठवीं बोर्ड का एग्जाम दिया है। रिपोर्टर काजल ने बालिका स्नेहा के अनुभव जानने के लिए उससे बात की तो स्नेहा ने खुश होते हुए बताया कि 'स्कूल एडमिशन के समय दस्तावेज को लेकर बहुत समस्या आई लेकिन चेतना संस्था के कार्यकर्ता के सहयोग से आखिरकार मेरा विद्यालय में एडमिशन हो ही गया, लेकिन फिर दूसरी समस्या मेरे सामने ये आ गई की मैं गांव के स्कूल से पढ़ी थी और यहां शहर के स्कूल का वातावरण वहां से भिन्न था अर्थात विद्यालय में बच्चे कभी - कभी मुझे बहुत परेशान

भी करते थे, लेकिन धीरे-धीरे मैं स्कूल जाने लगी चेतना संस्था के कार्यकर्ता हमारा नियमित ध्यान रखते थे कोई हमें कोई दिक्कत तो नहीं आ रही है और वे स्कूल स्टाफ से भी हमारे बारे में बात करते रहते थे ताकि हमें किसी परेशानी का सामना न करना पड़े इसलिए मुझे ज्यादा समस्या नहीं आई। एक तरफ मैं परिवार में आर्थिक समस्या होने के कारण अपने पिताजी का उनके काम में सहयोग भी करती और साथ ही दूसरी तरफ 8 वीं बोर्ड परीक्षा की तैयारी भी, इसलिए मैंने अपना टाइम टेबल बनाया और रोजाना सुबह विद्यालय जाने से पहले तीन घंटे पिताजी की दुकान पर कपड़े प्रेस करने में उनका सहयोग करती फिर 12:30 से 5:00 बजे तक विद्यालय में विषयवार पढ़ाई करती। स्नेहा बहुत ही उत्साह से बताती है की मैंने अपने समय का विभाजन बहुत अच्छे से किया और विद्यालय में होने वाले नियमित टेस्ट में भी अच्छे अंक प्राप्त किये। ये सब करते हुए मेरे अंदर आत्मविश्वास आ गया कि मैं अपने पेपर को अच्छे से हल कर पाऊंगी और यही हुआ भी क्योंकि एग्जाम में मैंने सभी प्रश्नों के उत्तर अच्छे से लिखे और मुझे आशा है कि मैं अच्छे नंबरों से पास हो जाऊंगी। मेरे एग्जाम की तैयारी अच्छे से करवाने तथा मुझे मोटिवेट करने के लिए मैं चेतना संस्था की आभारी हूँ।'

मां के संघर्ष और सहयोग ने दिया बच्चों को सहारा, शिक्षा से जोड़ उनका जीवन संवारा

बालकनामा रिपोर्टरः सरिता,
बातूनी रिपोर्टरः रोहन

जब बालकनामा की रिपोर्टर सरिता ने गुरुग्राम के एमार टावर सेक्टर 66 के पास की झुग्गी बस्ती में दौरा किया तो रोहन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि 'मेरा बड़ा भाई मयंक (परिवर्तित नाम) वह बड़े बच्चों के साथ रहकर नशा करता है। मेरे पिता जी बरसो पहले जेल चले गये थे घर पर केवल मम्मी है जो की सारा दिन काम करती जैसे -घर पर कपड़े और साफ-सफाई आदि ताकि हम बच्चे सकून से रह सके। परिवार का पेट कैसे भर सके इस उधेड़बुन में वह हमेशा ही रहती हैं और वह हम सबसे बहुत प्यार भी करती है इसलिये हमें अपनी कोई भी समस्या नहीं बताती हैं और खुद ही उनका सामना करती है। मेरी माँ का कोई सहारा नहीं है, पिताजी के जाने के बाद माँ ने हम लोगों को बहुत ही अच्छे से संभाला, लोगों ने माँ को तरह-तरह के ताने दिए और दुर्व्यवहार भी किया लेकिन मेरी माँ सुपर वुमन है, उन्होंने उन सब का डटकर सामना किया। माँ हमें ज्यादा डाँटती और मारती नहीं है, रात को जब काम से आती है तो थककर चूर हो जाती है लेकिन फिर भी हम लोगों के लिए खाना बनाती हैं वह अकेले ही हम दोनों भाइयों का पालन पोषण करती है। मेरा बड़ा भाई मयंक गलत संगति में पड़ गया और बीडी-सिगरेट, गुटखे इत्यादि का सेवन करने लगा। मम्मी ने यह बात सुनी तो वह बहुत निराश और परेशान हुई और भाई को समझाते हुऐ कहा की तुम जब बहुत छोटे थे तब तुम्हारे पिताजी को किसी अपराध के कारण जेल हो गई थी उसके बाद मैं तुम दोनों को लेकर गुरुग्राम आ गई। यहां आने के बाद बहुत दिनों तक मुझे कोई काम नहीं मिला और मैं अपनी मौसी के घर पर कुछ दिनों तक रही, फिर मौसी की सहायता से ही मुझे एक कोठी में झाड़ू-पोछा का काम मिल गया तब से मैं तुम दोनों भाइयों का पालन-पोषण कर रही हूं ताकि आप लोग अच्छा जीवन पा सके मैं चाहती हूँ की आप पढ़ लिखकर समाज में सम्मानजनक जीवन प्राप्त करें। बालक ने बताया की, मम्मी दोनों भाइयों को पढ़ाना चाहती हैं पर आर्थिक समस्या के कारण वह ऐसा करने में असमर्थ है। मुझे मम्मी की बातें अच्छी तरीके से समझ में आती है परंतु मेरा

बड़ा भाई बिल्कुल भी नहीं समझता है, मम्मी चाहे उसको कितना भी समझाएं परंतु फिर भी वह बुरी संगत को नहीं छोड़ता है। एक दिन जब चेतना संस्था की कार्यकर्ता बच्चों को बुलाने के लिए कम्युनिटी में जा रही थी तब उनकी मेरी मम्मी से मुलाकात हो गई। मम्मी ने रोहन के बारे में बताया तो कार्यकर्ता ने कहा आप चिंता ना करें, आप इसे संस्था के वैकल्पिक शिक्षा केंद्र पर पढ़ने के लिए भेजें और उसे समझाया कि आप हमारे शिक्षा केंद्र पर पढ़ने के लिए आइये। उनकी बातों से प्रभावित होकर रोहन पढ़ने के लिए केंद्र पर एक दिन गया तो वहां उसने कई तरह के गेम खेले और चित्र बनाए जिससे उसका वहां मन लग गया और फिर ऐसे वह वहां रोज जाने लगा, अगर किसी दिन नहीं जाता तो संस्था के कार्यकर्ता उसे रोज बुलाकर सेंटर पर ले जाने लगी और वहां सभी बच्चों को नशे के नुकसान के बारे में बताया गया की नशा हमारे जीवन को बर्बाद कर देता है। समाज के लोग हमें इज्जत नहीं देते हैं और हमारा स्वास्थ्य खराब हो जाता है और बताया कि बच्चों के लिए मम्मी पापा कितनी मेहनत करते हैं इसलिए बच्चों का काम सिर्फ पढ़ना है। सभी बच्चे पढ़ लिखकर भविष्य में कामयाब बने और अपने माता-पिता का नाम रोशन करें, फिर धीरे-धीरे मयंक प्रतिदिन केंद्र पर जाने लगा और नशेड़ी लोगों से दोस्ती समाप्त कर दी। इसके पश्चात एक दिन रोहन की माँ ने संस्था की कार्यकर्ता से कहा की इसका किसी स्कूल में एडमिशन करवा दो क्योंकि मेरे पास पैसों की समस्या है यदि आप लोगों का साथ रहेगा तो इसका भविष्य सुधर जाएगा। मैं तो पढ़ी-लिखी नहीं हूँ, मुझे स्कूल के बारे में कुछ पता ही नहीं है अर्थात मैं स्वयं से इसका एडमिशन नहीं करवा पाऊंगी इसलिए आप सहारा दे और इसका एडमिशन स्कूल में कराये। फिर क्या था संस्था की कार्यकर्ता ने स्कूल एडमिशन टेस्ट के लिए बच्चों को तैयार किया, उनके पूरे डॉक्यूमेंट कंप्लीट कराए, स्कूल में बात किया और उनका स्कूल में एडमिशन करवा दिया। स्कूल में एडमिशन पाकर रोहन बहुत खुश हुआ, रोहन की माँ ने संस्था की कार्यकर्ता को धन्यवाद प्रेषित किया और कहा की आपने निःस्वार्थ भाव से हमारी मदद की है, बच्चों के जीवन में शिक्षा का सबसे बड़ा उपहार आपने दिया है हम लोग हमेशा आपके आभारी रहेंगे।

नदी में सोना-चांदी जैसी वस्तुओं को ढूंढ कर बच्चे करते हैं अपना गुजारा

बातूनी रिपोर्टर अनस व रिपोर्टर किशन

नोएडा के नजदीक चारमूर्ति क्षेत्र की बस्तियों में जब पत्रकार पहुंचे तो जानने का प्रयास किया कि बच्चे किस प्रकार से अपना जीवन यापन कर रहे हैं और वह अपना खर्चा किस प्रकार से चला रहे हैं? बस्ती में रह रहे 14 वर्ष के बालक ने बताया कि इस बस्ती के कुछ दूर आगे एक नदी स्थित है, उस नदी में अधिकतर लोग अपने मंदिर का सामान और जादू-टोने से बचने के लिए लोग इस नदी में पैसे, सोना,चांदी या पीतल जैसी वस्तुएं फेंक कर चले जाते हैं। बस्ती में रहने वाले अधिकतर बच्चे सुबह के 7:00 से लेकर शाम के 6:00 बजे तक उस नदी में नहाते हैं और उस नदी के अंदर से पैसे, सोना चांदी एवं पीतल जैसी चीजों को ढूंढते हैं और इस तरह हर दिन इन बच्चों को छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीज मिल जाती है, हम भी उस नदी में पैसे और अन्य चीज ढूंढने के लिए जाते हैं। इस नदी के आगे वाले स्थान से एक नाला जोड़ दिया है जिस कारण इस नदी का पानी काफी गंदा हो गया है और हम बच्चों को उस गंदे पानी के अंदर जाकर पैसे और अन्य प्रकार की चीज ढूंढनी होती है। जब हम इस पानी के अंदर जाते हैं तो कई बार होता है कि वह पानी हमारे मुंह के अंदर या आँखों में एवं कान के अंदर चला जाता है जिसके कारण कई बच्चे बीमार भी पड़ जाते हैं। अधिकतर लोग अपने घर में पूजा करते हैं, भगवान की फोटो, पीतल की प्लेट या चांदी की कोई अन्य चीज पुरानी हो जाती है तो वह लोग एक पन्नी बांधकर लाते हैं और इस

नदी में उसे खोलकर फेंक देते हैं। इस स्थान पर अधिकतर लोगों की वह चीज आती हैं जो छूत और अछूत से संबंधित होते हैं जैसे किसी व्यक्ति ने सोना-चांदी जैसा सामान शरीर में पहन रखा हो और अचानक से उनकी मृत्यु हो जाए तो वह सोना-चांदी वाली चीज छूत कहलाई जाती है तो अधिकतर लोग फिर वह चीज इस नदी में बहाने आ जाते हैं और वही चीज को हम बच्चे दिन भर ढूंढते रहते हैं और कई बार हम बच्चों के हाथ में यह चीज लग जाती है तो हम अपने माता-पिता को दे देते हैं। दिन भर में हम बच्चे इस स्थान पर रहकर 100 से डेढ़ सौ रुपए नदी के अंदर से ढूंढ लेते हैं और उन पैसों में से कुछ पैसे अपने घर में दे देते हैं और कुछ पैसों से चीज आदि खा लेते हैं।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण बालिका हो रही शिक्षा से वंचित

बालकनामा रिपोर्टरः काजल,
बातूनी रिपोर्टरः शिवानी

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर की विभिन्न बस्तियों का दौरा किया तो इसी बीच मांग्यावास बस्ती में बातूनी रिपोर्टर नेहा ने बताया कि उसके घर से थोड़ी दूर एक बालिका रहती है वह पूरे दिन इधर - उधर घूमती रहती है। बालिका के बारे में पूरी जानकारी जानने के लिए बालकनामा रिपोर्टर ने शिवानी (परिवर्तित नाम) से मुलाकात की और बालिका से उसके नाम व परिवार के बारे में पूछा तो 8 वर्षीय शिवानी ने बताया की हम इटावा (उत्तर प्रदेश) के रहने वाले हैं लगभग एक वर्ष पहले हम जयपुर आए थे और यहां मेरी मौसी की झुग्गी के पास हमने भी झुग्गी बना ली और फिर यहीं रहने लगे। मेरे माता-पिता की मैं इकलौती संतान हूं, मेरे माता-पिता कचरा बीनने का काम करते हैं जो की प्रातः 6:00 बजे ही घर से निकल जाते हैं और शाम को देर तक घर लौटते हैं। मैं घर का जो भी कार्य होता है जैसे झाड़ू लगाना, बर्तन साफ करना, खाना बनाना और घर में रखे सामान का ध्यान रखती हूं क्योंकि झुग्गी का दरवाजा नहीं है। जब रिपोर्टर ने पूछा कि इतनी छोटी सी उम्र में आप पूरे दिन अकेली रहती हो तो क्या तुम्हे डर नही लगता ? बालिका ने मुस्कुराते हुए बताया की मैं अपने घर का ध्यान नही रखूंगी तो कौन रखेगा? और मेरी मां ने मुझे समझाया है कि बेटा धीरे -धीरे काम कर लेना और कोई परेशानी आती है तो मेरी मौसी जो पास की ही झुग्गी में रहती है उनके पास चली जाती हूं। जब बालकनामा रिपोर्टर ने बालिका से उसकी पढ़ाई के बारे में पूछा तो शिवानी ने बताया की वह गांव में सरकारी विद्यालय में कक्षा पहली में पढ़ती थी लेकिन यहां आने के बाद मेरी पढ़ाई छूट गई है और मैं सब कुछ भूल गई हूँ अब सिर्फ मुझे मेरा नाम लिखना भर याद है। शिवानी ने बताया कि अन्य बच्चों को स्कूल जाते हुए देखकर मेरा मन भी करता है लेकिन यदि मैं स्कूल जाऊंगी तो घर का काम और घर की देखरेख की कौन करेगा? बालकनामा रिपोर्टर ने शिवानी को चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र के बारे में बताया और उसे कहा कि, वह अपने माता-पिता से इस बारे में बात करे और वहां प्रतिदिन थोड़े समय के लिए पढ़ने आ जाया करे ताकि तुम अपनी जिम्मेदारी भी पूरी कर पाओगी और शिक्षा से भी जुड़ पाओगी।

कबाड़े में से कॉपी-किताब व बैग प्राप्त करके खुश सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर राज, रिपोर्टर किशन

जीवन में हर कोई कैसे न कैसे पैसे बचाने का नया तरीका सोचते रहते हैं परंतु जब सड़क एवं कामकाजी बच्चों के पास किताब, कॉपी, पेंसिल आदि खरीदने के पैसे नहीं हो पाते हैं तो वह किस प्रकार इसका हल निकालते हैं? नोएडा सेक्टर 80 की नजदीक झुग्गी बस्तियों के पास कुछ बच्चे कबाड़ा बीनने का कार्य कर रहे थे। पत्रकारों ने जब उन्हें कार्य करते हुए देखा तो पत्रकार उस ओर चल दिए, वहां पहुंचकर देखा तो वह बच्चे काफी खुश नजर आ रहे थे। फिर पत्रकारों ने उस खुशी का राज जाना तो पत्रकार भी भयभीत हो गए, वीर (परिवर्तित नाम) ने बताया की हम अपने माता-पिता के साथ नोएडा की झुग्गी बस्ती में रहते हैं और मैं वर्तमान में 12 वर्ष का हूँ और हम शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्कूल भी जाते हैं और वर्तमान में पांचवी कक्षा में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। जैसे सभी का तरह-तरह का कार्य होता है वैसा ही हमारा कार्य कबाड़ा बीनने और छाँटने का है। पिताजी और हम अलग-अलग स्थानों से कबाड़ा लेकर आते हैं ये स्थान जैसे मार्केट, गली मोहल्ला, फैक्ट्री इलाका, बिल्डिंग आदि है। हम सुबह के समय स्कूल जाते हैं और स्कूल से आने के बाद कबाड़ा बीनने के लिए निकल जाते हैं, कबाड़ा कई प्रकार का मिल जाता है कबाड़ा जैसे प्लास्टिक, लोहा, गद्दा, शराब की कांच की बोतल, किताब, कॉपी, पेंसिल आदि। यह सब कबाड़ा लाने के बाद हम कबाड़े को छाँटते भी हैं, कबाड़े को छाँटते समय तरह-तरह का कबाड़ा अलग करते हैं और हमें कबाड़े को छाँटते समय पढ़ाई लिखाई से संबंधित अन्य प्रकार की चीज मिलती है जैसे किताब, कॉपी, पेंसिल, कलर, ज्योमेट्री बॉक्स, बैग, आदि परंतु जब यह चीज प्राप्त होती है तो कुछ कॉपी भरी होती है कुछ खाली होती है कभी-कभी होता है की पूरी कॉपी खाली रहती है और दो चार पन्ने भरे रहते हैं, कलर पेंसिल इस्तेमाल करके आधी मिल जाती है तो हम उसको भी अपने पास रख लेते हैं। कई बार उपयोग किया हुआ पुराना बैग होता है जो ठीक हालत में होता परन्तु उसकी चेन ठीक नहीं होती है तो व्यक्ति लोग कूड़े कबाड़े में फेक जाते हैं, जब वह हमें मिल जाता है तो हम उसको अच्छे से साफ करके अपने कार्य में इस्तेमाल कर लेते हैं। कभी-कभी होता है कि इन चीजों को खरीदने के लिए हमारे पास पैसे नहीं होते हैं, इस कारण ऐसे ही हमें पढ़ाई से संबंधित अन्य चीज मिल जाती है जिससे हमारा काफी खर्चा बच जाता है और हमें दुकान आदि जगहों से बहुत कम खरीदना पड़ता है और यह चीज प्राप्त करके हम काफी खुश भी हो जाते हैं।

नींबू बेचने पर मजबूर कामकाजी बच्चे

बालकनामाः रिपोर्टर राज किशोर,
बातूनी रिपोर्टरः बादशाह

जब हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर गुरुग्राम के जलवायु समुदाय का दौरा करने के लिए गए तो ज्ञात हुआ कि वहां कुछ ऐसे बच्चे हैं जो की काम में संलिप्त हैं और वह अपना गुजारा नींबू बेचकर करते हैं। जब यह बात हमारे बालकनामा अखबार के पत्रकारों को पता चली तो उन्होंने खबर की तह तक जाने का निर्णय लिया और वहाँ गए जहाँ पर वह बच्चा रेहडी लगाता था और नींबू बेचता था। वहाँ बातचीत के दौरान हमारे बालकनामा अखबार की रिपोर्टर ने उनसे पूछा कि आप इतनी छोटी सी उम्र में यह काम क्यों कर रहे हो? तो उन्होंने बताया कि मैं सिर्फ अपने घर की जिम्मेदारी निभा रहा हूं, और जो भी मुझे नींबू बेचकर पैसे मिलते हैं वह मैं अपने घर पर देता हूं। पत्रकार ने पूछा कि आप कितने घंटे काम करते हो? तो बच्चे ने बताया कि, मैं सुबह से ही रेहडी लगाता हूं और शाम तक नींबू बेचता हूं और फिर वापस घर चला जाता हूँ और फिर इसी प्रकार अगले सुबह आ जाता हूं यही मेरी दिनचर्या है। तत्पश्चात हमारे पत्रकार ने उनसे पूछा कि आप इतनी कड़ी धूप में सुबह से शाम तक काम करते हो तो क्या आपको गर्मी नहीं लगती है? तो बालक ने अपना सम्पूर्ण साहस एकत्रित कर के कहा की काम के कारण नहीं लगती, अन्यथा जब गर्मी होती है तो हम किसी छायादार जगह पर चले जाते हैं और वहीं पर अपनी रेहडी लगा देते हैं और फिर हमारे रिपोर्टर ने उनसे पूछा कि आप पढ़ने नहीं जाते हो? तो उसने कहा कि पढ़ना तो चाहता हूं लेकिन हमारे पास इतने पैसे और समय नहीं है जिसकी वजह से हम पढ़ नहीं पा रहे हैं और घर की भी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है जिसके परिणामस्वरूप हम स्कूल नहीं जा सकते है। हमारे रिपोर्टर ने उन्हें बताया कि हमारी एक सामजिक संस्था है जिसके अंतर्गत वह कमजोर वर्ग के बच्चों को पढ़ाने और उनका दाखिला सरकारी स्कूल में करवाने में सहायता करती हैं और जब तक उनका एडमिशन सरकारी स्कूल में नहीं हो जाता है वह हमारे संस्था में पढ़ने आते हैं और बच्चों को हमारे संस्था की तरफ से पढ़ाई के साथ-साथ खेलने के लिए भी कई प्रकार के सामान दिए जाते हैं जैसे कि बैडमिंटन कैरम बोर्ड आदि और उन्हें समय-समय पर बाल अधिकार की ट्रेनिंग भी देते है। अतः आप एक बार पढ़ने अवश्य आइये, यह सुनकर बच्चे ने कहा की कहते तो आप ठीक है किन्तु मैं आपको इस बारे में घर पर सलाह करके बताऊंगा।

इस तपते मौसम में गर्मी से कैसे जूझ रहे हैं सड़क एवं कामकाजी बच्चे?

रिपोर्टर किशन

आइये जानते हैं, वर्तमान की कड़कती धूप में संभ्रांत घर में रहने वाले बच्चों की स्थिति और सड़क एवं कामकाजी बच्चों की स्थिति क्या है? और वह अपना समय किस प्रकार बिता रहे हैं। जैसा कि बढ़ती गर्मी के कारण मई के महीने में बच्चों के स्कूल की छुट्टी पड़ गई है इस प्रकार बालकनामा के पत्रकार दिल्ली के निजामुद्दीन में दौरा कर रहे थे और बच्चों से इस विषय पर जानने का प्रयास किया गया। संभ्रांत घर के बच्चे गर्मी की छुट्टी का आनंद वह अपने नाना-नानी, मामा-मामी, गांव और अपने माता-पिता के साथ ठंडी बर्फ जैसे इलाकों में घूम रहे हैं जैसे नैनीताल, शिमला, मसूरी आदि अब दूसरी तरफ हम सड़क एवं कामकाजी बच्चे गर्मी की छुट्टी किस प्रकार बिता रहे हैं यह जानते हैं। निजामुद्दीन में घूम-घूम कर कबाड़ी का कामकाज कर रहीं 12 वर्ष बालिका ने बताया की, हम सुबह के 6:00 से कबाड़ा बीनने के लिए निकल आते हैं

और तरह-तरह का कबाड़ा बीनते हैं। कबाड़ा बीनते-बीनते काफी तेज धूप भी लगती है और इस कारण अधिकतर तेज प्याज भी लगने लगती है, आसपास की लगी रेहड़ियों पर जब हम पानी पीने के लिए जाते हैं तो हमारा ऐसा हुलिया देखकर लोग हमें भगाते और ड़ाटने लग जाते हैं और पानी पीने से मना कर देते हैं तब जाकर मजबूरन हमें उन नल का पानी पीना पड़ता है जो बड़े-बड़े मकान के आसपास में मौजूद होते हैं और वह पानी इतना गर्म होता है कि वह हमसे पीया भी नहीं जाता परंतु मजबूरन प्यास बुझाने के लिए हमें वह पानी पीना पड़ता है। हम बच्चों के पास इतने पैसे नहीं हो पाते कि हम एक पानी की बोतल खरीद पाए। इन हालातों को देखने के दौरान बच्चों ने बताया की गर्मी में हमें इतनी समस्याओं से गुजरना पड़ता है यदि कुछ अलग-अलग स्थानों पर हम सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए मटके में पानी रख दिया जाए तो हम बच्चों को इन परेशानियों से बचने में काफी राहत मिल जाएगी।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

विपरीत परिस्थितियों एवं घर की जिम्मेदारियों ने किया बालिका को शिक्षा से वंचित

बालकनामा रिपोर्टर -सरिता

गुरुग्राम के चक्करपुर गाँव में आये दिन अनेके परिवार अपने जीवन यापन करने के लिए यहाँ आते है, इसी तरह अमृता (परिवर्तित नाम) का परिवार भी उनमें से एक है। गुरुग्राम से बालकनामा की रिपोर्टर सरिता ने जब चक्करपुर गाँव की झुग्गीयों का दौरा किया तो इस दौरान वह अमृता से मिली। अमृता एक 11 वर्षीय लड़की है, जो मूलतः खागरिया जिला बिहार की रहने वाली है और वह अपने गाँव में एक गैर-सरकारी स्कूल से कक्षा पांचवी तक पढ़ी है। अमृता ने बताया की उनकी माता वहाँ मछली बेचती थी और पिता लेबर मिस्त्री का काम करते थे ' एक दिन उनके पिता जी काम से लौट रहे थे तो उस दौरान एक हादसे में उनकी मृत्यु हो गयी और अमृता और उनके परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा साथ ही पूरे परिवार की जिम्मेदारी अमृता की माता जी पर आ गयी। हालाँकि उनकी मदद के लिए उनकी बहन की बेटी आगे आई और वह अमृता और उनके पूरे परिवार को गुरुग्राम के चक्करपुर में ले आई ताकि कुछ कामकाज और रहने का गुजरा हो सके। यहाँ उनकी माता जी कोठी में झाड़ू और पोछे लगाने का काम करने लगी और इस प्रकार परिवार का पालन पोषण किया और घर की बड़ी

बेटी होने का फर्ज. अमृता ने निभाया अर्थात वह अपनी दोनों छोटी बहनों जिनकी उम्र क्रमशः 5 और 3 साल है उनका ध्यान रखने के साथ-साथ घर का खाना बनाना इत्यादि जिम्मेदारयों का निर्वहन करने लगी। अमृता आगे बताती है की एक दिन हमारी झुग्गी में चेतना संस्था से एक कार्यकर्ता आई और अपने संस्था के शिक्षा केंद्र पर पढ़ने के लिए कहा और वह कुछ दिन शिक्षा केंद्र पर गयी लेकिन घर में दो छोटी बहनों की जिम्मेदारी होने से अमृता की माता ने उसको शिक्षा केंद्र पर जाने से मना कर दिया जिस कारण वह चाहते हुए भी अपनी शिक्षा को पूरा नही कर पायी ' अमृता से जब पत्रकार सरिता ने उनके सपने के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया की वह पढ़ लिकर एक पोलिस ऑफिसर बनना चाहती है क्योंकि वह ऐसा करके अपने पिता का सपना पूरा करना चाहती है और अपनी छोटी बहनों को भी पढ़ाना चाहती है।

शौचालय जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित बच्चे कर रहे व्यक्तिगत स्वच्छता के लिए संघर्ष

बातूनी रिपोर्टर-चमन और कोमल

स्वच्छता को अपने दैनिक जीवन में अपनाकर हम स्वयं को विभिन्न रोगों से बचा सकते हैं और स्वस्थ रह सकते हैं। यह बीमारियों के प्रसार को रोकता है और अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने में हमें सहायक होता है। लेकिन अभी भी बहुत सी बस्तियां खासकर झुग्गी बस्तियां ऐसी है जहाँ पर इन सुविधाओं के बारे में लोग सोच भी नही सकते हैं क्योंकि वहां पर ऐसी अति आवश्यक मूलभूत सुविधाएं उपस्थित नही है` दिल्ली की एक ऐसी ही झुग्गी बस्ती की आज हम बात कर रहे है, जब बालकनामा पत्रकार ने इस समुदाय में रहने वाले बच्चों से बात की तो बच्चों ने बताया कि इस समुदाय में लोग छोटे-छोटे कमरों के घरों में किराये पर रहते हैं जिसमें निजी शौचालय नही होते है और ज्यादातर लोग मजदूरी का काम करते है ऐसे में वे इस एक कमरे के घर में रहने को मजबूर होते है और घर के सभी छोटे-बड़े सदस्य सार्वजनिक शौचालय का इस्तेमाल करते है। 11 वर्षीय बातूनी रिपोर्टर चमन ने बताया कि "हमारे समुदाय में दो सार्वजनिक शौचालय उपलब्ध होने के बावजूद, सुबह के समय उनमें अत्यधिक भीड़ रहती है जिस कारण बच्चों को समय पर शौचालय का उपयोग करने में कठिनाई होती है, परिणामतः वे स्कूल के लिए देर से पहुँचते हैं या कभी-कभी स्कूल या संस्थागत शिक्षा केंद्र भी नहीं जा पाते। इसके अतिरिक्त, सार्वजनिक शौचालयों की स्वच्छता की स्थिति अत्यंत दयनीय है और उनमें पानी की कमी की समस्या भी होती है, जिससे पूरे समुदाय में गंदगी फैलती है। इन समस्याओं के कारण, बच्चे जल्दी-जल्दी बाहर शौच करने के लिए मजबूर हो जाते हैं, जिससे वे जल्दी बीमार पड़ जाते हैं। कई बच्चे उल्टी, दस्त, बुखार और पेट की समस्याओं जैसे लक्षणों से पीड़ित होते हैं। वे लगातार पेट दर्द के कारण अपनी दैनिक गतिविधियों में ठीक से प्रदर्शन करने में असमर्थ होते हैं। 12 वर्षीय कोमल (परिवर्तित नाम) ने भी बताया जब हम स्कूल से आते हैं और शौचालय जाते है तो वहां पर पानी नहीं होता है और पूरे शौचालय में गंदगी रहती है जिस कारण हम शौचालय भी नही जाते है। समुदाय के पास कोई चिकित्सा डिस्पेंसरी या अस्पताल नहीं है, हालाँकि पड़ौस में केवल एक छोटा सा क्लिनिक उपलब्ध है जरूर है परन्तु मौसम की बदलती परिस्थितियों के कारण इस क्लिनिक में अक्सर भीड़ रहती है, जिसमें अधिकांश लोग चिकित्सा सहायता लेने आते हैं। समुदाय में केवल कुछ लोगों के पास अपने शौचालय हैं, लेकिन वे दूसरों को उनका उपयोग करने की अनुमति नहीं देते हैं, जिससे बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। यह स्थिति उनकी पढ़ाई और समग्र कल्याण पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को भी प्रभावित करती है।

बाल लीडर की समझदारी से हादसे का शिकार होने से बाल-बाल बची बस्ती

बालकनामा रिपोर्टर: काजल, बातूनी रिपोर्टर: संदीप

जैसा कि हम सभी जानते हैं घरों की पाकशाला में काम आने वाला गैस सिलेंडर यदि फट जाऐ या गैस लीक होते हुए यदि आग लग जाए तो यह बहुत खतरनाक होता है। यह केवल उस घर के व्यक्तियों को ही नहीं जला देता बल्कि इसके कारण आस -पास के लोगों की भी मृत्यु तक हो सकती है। कुछ समय पहले गैस सिलेंडर में आग लगने की घटना के बारे में जानकारी मिली। इसी क्रम में बातूनी रिपोर्टर संदीप ने बताया की जयपुर के प्रेमनगर कच्ची बस्ती में रहने वाले सभी लोग गैस का इस्तेमाल करते हैं और एक दिन हमारी झुग्गी के पास वाली झुग्गी में रहने वाले मेरे दोस्त अमर (परिवर्तित नाम) के घर गैस सिलेंडर में आग लग गई। अमर के माता - पिता काम पर गए थे और घर पर कोई नही था और उसे भूख लग रही तो अमर ने अपने लिए मैगी बनाने के लिए गैस का उपयोग किया और मैगी बनाने के बाद गलती से गैस को चालू रह गई और अमर टीवी देखते हुए मैगी खाने में व्यस्त हो गया। जब कुछ समय बाद सिलेंडर से धुंआ निकलने लगा तो अमन घर के बाहर आया और चिल्लाने लगा। सिलेंडर से धुंआ और चिंगारी निकलते हुए देखा तो बस्ती वाले भी सब घबरा गए और सभी अपने घरों से बाहर निकल कर आ गए। तभी बढ़ते कदम के लीडर संदीप ने पास ही किनारे वाले की दुकान वाले को अग्निशमन यंत्र के नम्बर बताएं ताकि समय रहते आग को फैलने से रोका जा सके। दुकानदार ने फोन करके अग्निशमन विभाग में फोन किया और बस्ती में लगभग 30 मिनट के अन्तराल में दमकल आई और सिलेंडर से निकलने वाले धुंआ और चिंगारी पर नियंत्रण किया। जब मामला थोड़ा शांत हुआ तब दुकानदार ने बालक संदीप से पूछा कि तुम्हें अग्निशमन यंत्र के बारे में किसने बताया और इसका नम्बर कहां से मिला? तब बालक ने बताया की मैं चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र पर पढ़ने जाता हूं वहां हमें विभिन्न इमरजेंसी नंबरों के बारे में बताया जाता है इसलिए मुझे पुलिस, चाइल्ड हेल्प लाईन नम्बर, अग्निशमन यंत्र और एंबुलेंस इत्यादि के नंबर याद है। दुकानदार ने बालक के द्वारा किए गए कार्य के लिए प्रशंसा की और उसे अच्छे से पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया।

बढ़ती गर्मी के प्रकोप से बचने के लिए सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने बताये महत्वपूर्ण उपाय

पृष्ठ 1 का शेष

वह कड़ी धूप में कार्य कर रहा था। बालक ने बताया कि जब हमें अधिकतर धूप लगती है तो हम आसपास की दुकानों के नीचे छाता जैसी सुविधा होती है तो हम वहां पर जाकर खड़े हो जाते हैं। अब तक हमने अनेक स्थानों से कड़ी गर्मी से बचने के अनेक कामकाजी बच्चों की राय बताई कामकाजी बच्चों की राय जानने के बाद पत्रकारों ने यह जानने का भी प्रयास किया कि वर्तमान में गर्मी का तापमान बढ़ने का क्या राज है ?कई बच्चों ने अपनी बातों को एक-एक करके बताया। दिल्ली की चूना भट्टी बस्ती में रह रहे कार्तिक (परिवर्तित नाम) ने कहा कि इस वर्ष गर्मी का प्रकोप अपेक्षाकृत अधिक रहा है जिसके कारण गर्मी का तापमान 45 से 50 डिग्री तक रहा है।

इतना तापमान होने के अनेक कारण है जैसे जंगलों की अंधाधुंध कटाई एवं उनके स्थानों पर बड़ी-बड़ी बिल्डिंग, फैक्ट्री, माल, आदि का निर्माण हो रहा है और पेड़ दिन पर दिन कम होते जा रहे हैं परिणामतः तापमान 45 से 50 डिग्री तक पहुंच गया है। यदि मानव चाहे तो हम इसको कम भी कर सकते हैं, हम अधिक मात्रा में पेड़ लगाए, हमें यह बात समझ में आ गई है क्योंकि हम बस्ती में रहते हैं और हमें और पूरे भारत एवं पूरी पृथ्वी को ही पेड़ों की बहुत आवश्यकता है। हमने भी अपने पास के मैदान में आठ पेड़ लगाए हैं जिसमें हम रोजाना उसकी देखभाल करते है और उसमें पानी देते हैं यदि हम अधिक से अधिक पेड़ लगाए तो 45 से 50 डिग्री का तापमान की आवश्यकता ही नहीं होगी।

नोएडा के हबीबपुर की बस्तियों में रह रही माधुरी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि इस बस्ती में हम भी रहते हैं परंतु इस बस्ती में अधिकतर कबाडे का कामकाज होता है। जैसे हम गर्मी के तापमान के बढ़ने का कारण जान रहे हैं वैसे ही एक कारण यह भी है की इस बस्ती में अधिकतर लोग कबाड़े को रोजाना जला देते हैं जिसके कारण धुआँ हो जाता है और वह धुआँ आकाश में पहुंचता है जिससे वायुमंडल दूषित होता है, यदि हम कूड़े को ना जलाएं तो बढ़ती गर्मी के तापमान से बच सकते हैं। जयपुर में रह रही 15 वर्ष की बालिका ने बताया कि गर्मी का तापमान बढ़ने का एक कारण यह भी है कि हर एक स्थान पर गंदा पानी भरा हुआ पाया जाता है। बस्ती के तथा आसपास के एवं गांव के लोग उस गंदे पानी में अपने घर का गंदा कचरा-कूड़ा आदि फेंक कर चले जाते हैं जिस कारण जल प्रदूषण बढ़ रहा है। यदि हम अपने आसपास में खुद साफ-सफाई रखें, नाले और नदियों को साफ सुथरा रखें तो हम बढ़ते गर्मी के तापमान से बच सकते हैं।

बच्चों ने जाना विश्व पर्यावरण दिवस का महत्व, चलाया जन जागरूकता अभियान

बालकनामा रिपोर्टर- काजल, राजकिशोर, बातूनी रिपोर्टर-मनीष, सुमित,अजरुल

लगातार बढ़ते प्रदूषण से प्रकृति को बचाने के उद्देश्य से पर्यावरण दिवस मनाने की शुरूआत हुई। बढ़ते प्रदूषण के कारण प्रकृति खतरे में हैं, अतः देखा जाए तो प्रकृति जीवन जीने के लिए प्रत्येक जीव को हर जरूरी चीज उपलब्ध करवाती है। ऐसे में अगर प्रकृति प्रभावित होगी तो जीवन प्रभावित होना भी लाजमी है तथा इस प्रकार यदि बच्चों में भी प्रकृति के परिप्रेक्ष्य कुछ अच्छी या बुरी आदत पड़ जाती है और वह आजीवन बनी रहती है इसलिये बच्चों में अच्छी आदतों को डालना जरूरी है और पर्यावरण संरक्षण के लिये पर्यावरण की शिक्षा देना अतिआवश्यक है। इसी क्रम में सड़क एवं कामकाजी बच्चों को प्रतिमाह होने वाली जीवन कौशल कार्यशालाओं के दौरान इस ओर उनका ध्यान आकर्षित किया गया तथा उनमें जागरूकता लाने हेतु बताया गया की विश्व पर्यावरण दिवस क्यों मनाया जाता है? पर्यावरण संरक्षण में बच्चे क्या योगदान कर सकते है? इत्यादि के बारे में जानकारी दी गई। जयपुर की जामड़ोली बस्ती की सीमित जगह में छोटे-छोटे घर बने हुए हैं तथा छायादार पेड़ों का अभाव देखने को मिलता है। अतः यहाँ सड़क एवं कामकाजी बच्चों से पौधे लगाने की गतिविधि करवाई गई, जिसमें सभी बच्चों ने मिलकर सबसे पहले मिट्टी पर पानी डालकर गीला किया एवं पौधा लगाने के लिए गड्ढा खोदा और उसमें दो पौधे लगाए। बालक दीपक और मनीष ने दोनों पौधों में समय -समय पर पानी, खाद डालने एवं रखरखाव की जिम्मेदारी ली है इसके अतिरिक्त लखेसरा कच्ची बस्ती में बच्चों ने समुदाय को पर्यावरण पर जागरूक करने के लिए रैली निकाली और पर्यावरण सुरक्षा के नारे लगाए। बालक हनीफ और बालिका मुस्कान ने बताया कि वे पर्यावरण सुरक्षा को ध्यान में रखेंगे और बस्ती में जो लोग आसपास कूड़ा फेंकते हैं और गंदगी फैलाते है। ऐसे लोगों को कचरा दूर स्थान या कचरा पात्र में डालने के लिए जागरूक करेंगे और बारिश के दिनों में बस्ती में कम से कम पांच पेड़ लगाएंगे। इसी तरह अन्य बस्तियों के सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने विश्व पर्यावरण दिवस पर पोस्टर बनाकर, पौधे लगाकर एवं रैली के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया तथा विश्व पर्यावरण दिवस के महत्व को समझा। वहीं गुरुग्राम में भी बढ़ते कदम के सदस्यों ने विश्व पर्यावरण दिवस पर जन जागरूकता अभियान चलाया। इस पर्यावरण दिवस के अवसर पर बच्चों ने जगह-जगह, गली-मोहल्ले जाकर पर्यावरण संरक्षण का महत्व बताया। इस अवसर पर बच्चों ने तरह-तरह के पेंटिंग स्लोगन और आर्ट एंड क्राफ्ट सम्बंधित गतिविधियां की और बच्चों ने बस्ती में वृक्षारोपण के कार्यक्रम आयोजित किये। सभी बच्चों ने एक-एक पौधा लगाया और बच्चों ने शपथ ली कि "कभी भी हम हरे पेड़-पौधों को नहीं काटेंगे, पेड़ पौधे हमारे लिए बहुत ही लाभदायक है अगर पेड़ पौधे नहीं रहेंगे तो हम नहीं जी पाएंगे।" इस अवसर पर बालकनामा के रिपोर्टर राजकिशोर ने बच्चों को पर्यावरण का महत्व बताते हुए कहा कि हम सभी को पर्यावरण की रखवाली करनी होगी तभी हमारे जीवन में खुशहाली आएगी। आज सूखापन और मरुस्थलीकरण की समस्या बढ़ती जा रही है। लोग भोजन, पानी व आवास के लिए लगातार पर्यावरण का दोहन कर रहे हैं जिससे जलवायु में परिवर्तन हो रहा है, अतः हमें इसे रोकना होगा नहीं तो आने वाले समय में जीवन संभव नहीं होगा। आज वायु प्रदूषण की वजह से सांस लेना मुश्किल हो रहा है लोगों में तरह-तरह की बीमारियां फैल रही हैं प्रदूषण की वजह से भूमिगत जल भी दूषित हो रहा है। पीने का शुद्ध पानी तक नहीं मिलता क्योंकि नदियां दूषित हो चुकी है और सूखती जा रही हैं। दूषित पानी का असर बच्चों पर ज्यादा एवं जल्दी पड़ता है, दूषित पानी पीकर बच्चे बीमार होते हैं। प्रदूषण की वजह से ओजोन परत में छेद हो रहे हैं जिससे कैंसर जैसी महामारी फैलती है, जिसका की इलाज बहुत महंगा होता है और गरीब आदमी तो इलाज के आभाव में ही दम तोड़ देते हैं। मानव अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए निरंतर वनों को काट रहा है जिससे वन्य जीव विलुप्त हो रहे हैं और प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है अगर ऐसे ही चलता रहा तो तेज धूप, बाढ़, सूखा या भूकंप से जीना असंभव हो जाएगा। मनुष्य की मूलभूत जरूरतें जैसे भोजन के लिए अनाज, पीने का साफ पानी, जीने के लिए शुद्ध वायु, वर्षा के लिए पेड़-पौधे आदि सभी पर्यावरण द्वारा ही पूरी की जाती हैं। मनुष्य, जीव-जंतु, पेड़-पौधे आदि सभी पर्यावरण पर निर्भर हैं। जीवन के लिए स्वच्छ पर्यावरण का होना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए हम सभी को पर्यावरण का संरक्षण करना होगा जिसके लिये कुछ काम स्वयं भी कर सकते हैं जैसे बिजली का कम उपयोग करें, पानी को दूषित न करें, प्लास्टिक का कम से कम इस्तेमाल करें, और हरे पौधों को काटने से रोके वरन नये पौधे लगाए तभी भविष्य में हमारा जीवन बच पाएगा।

शौच करने गए मासूम के साथ हुई दुर्व्यवहार की कोशिश, बालक अभी भी सदमें में

बालकनामा रिपोर्टरः काजल, बातूनी रिपोर्टरः नईम

जेडीए बस्ती में रहने वाले 12 वर्षीय नईम (परिवर्तित नाम) के साथ शौच के लिए जाते समय डरा देने वाला वाकिया घटित हुआ, बालक जेडीए बस्ती में अपने परिवार सहित रहता है व कक्षा 6 में पढ़ता है। एक दिन बालक स्कूल से लौटकर घर आया एवं घर से शौच करने के लिए स्टैंड के सार्वजनिक शौचालय जाने के निकला तो रास्ते में दोस्त मिल गया, लिहाजा वह भी बालक के साथ चला गया, बालक ने बताया की जब वह शौचालयों में गया तो अंदर बहुत गंदगी थी एवं श्वाँस तक नहीं ली जा रही थी तो मैंने दोस्त के साथ बाहर से बोतल नल से भरकर पीछे जंगल जाने का निर्णय लिया तो वहाँ एक अधेड़ उम्र के नशेड़ी व्यक्ति ने बालक को देख लिया और बालक के पास आकर उसका हाथ पकड़ लिया और बालक से बोला की उसके साथ पीछे जंगल में चले इसके लिए वह उसे बीस रुपए देगा, यह सुनकर बालक और उसका दोस्त डर गए और रोने लगे और हाथ छुड़ाने लगे बालक किसी तरह हाथ छुड़वाकर वहाँ से भाग निकला और इसी बीच नशेड़ी व्यक्ति वहाँ से नीचे सड़क की तरफ भाग गया, बालक नईम दौड़कर अपने चाचा के पास गया और रोते-रोते सारी बात बताई। बालक के चाचा बताते है की उन्होंने जब बालक को देखा तो समझ नहीं आया की आखिर हुआ क्या है? बालक को इस हद तक डरा हुआ कभी नहीं देखा, बालक जितना अपनी भाषा में समझा पाया वह समझकर बालक के चाचा और एक-दो और व्यक्ति दौड़कर गए और आरोपी को पकड़ लिया और मारपीट के बाद उसे पुलिस के हवाले कर दिया, बालक के पिता ने आरोपी के विरुद्ध शिकायत कर दी है, दूसरी तरफ बालक गंभीर रूप से डरा हुआ है एवं सदमे में है। उसके साथ पहली बार ऐसी घटना हुई है जिससे वह गंभीर रूप से डरा हुआ है, बाहर आना-जाना बालक के लिए अब चुनौती सा बन गया है, हालांकि परिवारजन और बाकि लोग बालक को समझाने में लगे है की बालक इस वीभत्स घटना से बाहर आये परन्तु इस घटना ने उसे काफी आघात पहुँचाया है, वास्तव ये हमारे लिए भी सोचने का विषय है यदि अभी भी यह हमारे लिए सोचने का गंभीर विषय नहीं बन पाया है तो हमें एक समाज के रूप में खुद को सभ्य नहीं कह सकते क्योंकि खुले में शौच , शौचालयों की स्थिति, नशेड़ीयों का हर जगह हलाहल सा फैलना हमारे समाज में बच्चों को दिये जाने वाले काल्पनिक बाल हितैषी समाज को कल्पना ही बना देने को आतुर है, बचपन में होने वाले यह हादसे समाज, आस-पास के लोगो की सक्रियता से रुक सकते है हालांकि हम ऐसा करने में अभी भी चूक रहें है।

निमार्णाधीन इमारत से गिर कर बच्चे की हुई दर्दनाक मौत

रिपोर्टर अजरुल, बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर

कैसे एक बोलता बालक अचानक ही सदा के लिये खामोश हो गया? एक बच्चा कैसे निमार्णाधीन इमारत के ऊपर जाता है और अचानक से उस बच्चे का पैर फिसल जाता है और वह छत से नीचे गिर जाता है जिससे कि उसकी घटनास्थल पर ही मृत्यु हो जाती है। आज हम आपको एक ऐसी घटना के बारे में बताने जा रहे हैं जो की बहुत ही दुखद है, यह पूरा घटनाक्रम वजीराबाद सेक्टर 52 गुरुग्राम हरियाणा के पीछे वाली झुगी बस्तियों में घटित हुआ। जब यह सुचना हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर को मिली तो वह वजीराबाद के बस्तियों में दौरा करने के लिए गए तो वहां के बच्चों ने बताया की कुछ दिन पहले कुछ बच्चे जो की पास के ही बस्तियों में रहते है वह एक अंडर कंस्ट्रक्शन बिल्डिंग जिसमें की कुछ बच्चे उसके अंदर टूटा -फूटा कील, चुन्नी एवं कूड़े या लकड़ी बीनने के लिए गए तो एक बच्चा निमार्णाधीन ईमारत के ऊपर चला गया और जब वह वहाँ ऊपर की तरफ वह बच्चा गया तो उसका पैर अचानक से फिसल गया जिससे वह मासूम छत से नीचे गिर गया और उसकी तत्काल मृत्यु हो गई। जब हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर इस खबर हेतु बस्तियों में गए और बस्ती के लोगों से बातचीत की तो ज्ञात हुआ कि वाकई में ही एक बच्चा जो की अंडर कंस्ट्रक्शन बिल्डिंग में गया हुआ था और उसका पैर फिसल गया और वह आकस्मात छत से नीचे गिर गया जिससे कि उसकी मृत्यु हो गई। इस हादसे के बाद से बच्चे के परिवार के सदस्यों का रो-रो कर बुरा हाल है और आसपास के बच्चे और बड़े सदमे में है की कैसे एक हँसता-खेलता बचपन अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए काल के गाल में समा गया।

नौवीं कक्षा में फेल होने के कारण परिवार ने बच्चे से लिया काम करवाने का निर्णय

बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार
बातूनी रिपोर्टर - अल्ताफ

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार पश्चिमी दिल्ली के अमर पार्क का दौरा करने गए तो उन्हे वहां के बातूनी रिपोर्टर अल्ताफ ने बताया की उसका एक दोस्त है जिसका नाम जावेद (परिवर्तित नाम) है वह भी अमर पार्क के स्लम एरिया में ही रहता है, वह हाल ही में कक्षा 9वीं की परीक्षा में फेल हो गया। जिसकी वजह से, उसके माता-पिता ने परिवार की वित्तीय स्थिति में मदद करने के लिए उसे अपने साथ किराने की दुकान में सामान सप्लाई का काम करवाने का निर्णय लिया है। हालाँकि पड़ोसियों, स्कूल के शिक्षकों और सामुदायिक समूह के सदस्यों एवं शुभचिंतकों के सुझाव और प्रोत्साहन के बाबत भी जो मानते हैं कि जावेद अभी भी युवा है और अगले साल 9वीं कक्षा उत्तीर्ण करने में सक्षम है, परन्तु अंततः परिवार ने उसे शिक्षा में दूसरा मौका नहीं देने का फैसला किया है। जावेद के पिता का कहना है, "हम अपने पड़ोसियों और समुदाय के सदस्यों की सलाह और समर्थन की सराहना करते हैं, लेकिन हमारा मानना है कि जावेद का समय परिवार की मदद करने और वित्तीय योगदान देने में बेहतर व्यतीत होगा।"अमर पार्क जैसे झुग्गी-झोपड़ी इलाकों में छोटे बच्चों को अपने परिवार की आर्थिक मदद करने के लिए छोटे-मोटे काम करते देखना एक आम बात है परन्तु दुर्भाग्य से, ऐसी स्थितियों में इन बच्चों की शिक्षा अक्सर पीछे रह जाती है। हालांकि यह देखकर खुशी हो रही है कि समुदाय जावेद की शिक्षा का समर्थन करने के लिए एक साथ आ रहा है, यह अंततः परिवार पर निर्भर है कि वह क्या निर्णय लेते है? जिसे वे अपनी परिस्थितियों के लिए सर्वोत्तम मानते हैं। हम केवल यह आशा कर सकते हैं कि जावेद अपने बेहतर भविष्य के लिए प्रयास करना जारी रखेगा।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

आज भी पश्चिमी दिल्ली के सुलभ शौचालयों में बच्चे नहीं हैं सुरक्षित

रिपोर्टर :-हलीमा

पश्चिमी दिल्ली के समुदाय में बच्चे आज भी सुरक्षित नहीं है, एक परिवार के दो बच्चों की यह खबर है जिसके अंतर्गत 13 वर्षीय रवि कुमार (परिवर्तित नाम) और 11 वर्षीय रोहन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम जखीरा में अपने परिवार के साथ झुग्गियों में निवास करते हैं और हमें यहाँ आए एक दो महीने ही हुए हैं अर्थात हम गांव से दिल्ली आकर इस जखीरा झुग्गी में किराए के मकान में रहने लगे हैं। इनके मकान में शौचालय की व्यवस्था नहीं है जिस कारण से इन दोनों भाइयों को उनके सामने बन रहे शौचालय में जाना पड़ता है। रवि कुमार ने बताया कि एक दिन, रात के समय उसे बहुत तेज से शौच लगा था जिस कारण से उसने अपने छोटे भाई रोहन को उठाया और उसको अपने साथ शौचालय लेकर गया। इन दोनों भाइयों ने देखा कि शौचालय के अंदर सन्नाटा था अर्थात ज्यादा व्यक्ति नहीं थे, वहां पर एकमात्र व्यक्ति बैठा हुआ था जो की नशे की हालत में गांजा

पी रहा था और इन दोनों बच्चों को आते हुए देख बहुत बुरी तरीके से घूर रहा था जिससे दोनों बच्चे सहम गए परंतु इन दोनों को शौचालय जाना भी बहुत जरूरी था तो इन लोगों ने इस भय की परवाह न करते हुए शौचालय में प्रवेश कर लिया और रवि कुमार और रोहन ने शौचालय में जाकर निवृत्त हुए तथा वापसी आने पर जब इन बच्चों ने देखा कि सुलभ शौचालय में उन दोनों बच्चों के सिवा और कोई नहीं था तभी वह जो व्यक्ति गांजा का नशा कर रहा था उन्होंने उसका रास्ता रोक लिया तो वह दोनों बच्चे बोले कि अंकल हमें जाने दीजिए हमारा रास्ता क्यों रोका है? हमें जल्दी घर जाना है क्योंकि रात हो रही है, तब उस व्यक्ति ने उन लोगों को जबरदस्ती पकड़ लिया और उनसे गुस्से में बात करते हुए गाली-गलौज किया। उसने बच्चों से कहा कि अपने मां का मोबाइल नंबर दो और अपने घर का पता दो, मैं तुम्हारे मां-बाप को फोन करके यह बताऊंगा कि मैंने आपके दोनों बच्चों को किडनैप कर लिया है और मैं तुम्हें छोड़ने के बदले तुम्हारे माता-पिता से पैसे लूंगा। इन दोनों भाइयों में जो बड़ा भाई रवि कुमार था वह उससे नहीं डरा और उसने उसका सामना किया और कहा की अंकल मैं अपनी मम्मी का मोबाइल नंबर नहीं दूंगा और ना ही आप लोग हमें किडनैप कर पाएंगे बल्कि हम आपको दाँत काटकर भाग जाएंगे। परंतु बच्चों द्वारा ऐसा कुछ नहीं हुआ बल्कि जिस व्यक्ति ने नशा किया हुआ था उसने बच्चों को जोर से पकड़ लिया और पास खड़े एक अन्य व्यक्ति जो उसका दोस्त था उसके साथ मिलकर उसने बच्चों को जकड लिया और अपने दोस्त से कहा कि तुम पुल की दीवार उछल कर दूसरी जगह खड़े हो जाओ और मैं दोनों बच्चों को उधर की तरफ फेंकूंगा और तुम कैच कर लेना फिर हम इनको किडनैप कर लेंगे। रोशन और रोहन उस अनजान व्यक्ति की बात को सुनकर बहुत ज्यादा डर एवं सहम गए, तभी उन्होंने देखा कि शौचालय की तरफ एक व्यक्ति और आ रहा था तो यह देख वह दोनों बच्चे चिल्लाने लगे और उन्होंने कहा कि अंकल इस अंकल ने बहुत ज्यादा नशा किया हुआ है और हमको धमकी दे रहे हैं कि हम तुम्हें किडनैप करके बेच देंगे और हमारे मम्मी-पापा से इसके बदले में पैसे लेंगे। तो जैसे ही वह व्यक्ति उन बच्चों की मदद करने के लिए आगे बढ़ा तो जिस व्यक्ति ने नशा किया था वह उस व्यक्ति से डर गया और उसने उन दोनों बच्चों को जोड़कर धक्का मारा और वहां से अपनी जान बचाकर नौ दो ग्यारह गया। रवि और रोहन ने उस अनजान व्यक्ति को धन्यवाद किया और भाग कर अपने घर आ गए और आप बीती अपनी माता जी को बताई तो उनकी मम्मी ने कहा कि हम यहां से दूसरा घर बदल लेंगे और अभी दो-चार दिन की परेशानी है फिर हम शौचालय घर में ही बना लेंगे तब आपको कहीं पर भी जाने की जरूरत नहीं होगी उस समय इन बच्चों को अपनी मां की यह बात सुनकर बहुत ज्यादा शांति मिली और इस प्रकार वो अपने आप को मां के आंचल में सुरक्षित महसूस करने लगे।

पक्षी की जान बचाकर बालिका ने दिया संवेदना और सहयोग का संदेश

बातूनी रिपोर्टर गीता व रिपोर्टर किशन

जून-जुलाई के महीनों में अर्थात इन दिनों बढ़ते तापमान से गर्मी के कारण इंसान भी बेहोश हो रहे हैं। इतनी गर्मी को जब इंसान सहन नहीं कर पा रहे हैं तो सोचिए पशु और पक्षियों पर इसका क्या असर पड़ रहा होगा? नोएडा की एक बस्ती में जब पत्रकार दौरा कर रहे थे तो पत्रकारों ने देखा कि कुछ बच्चे एक मैदान पर एक छोटे से कबूतर के साथ खेल रहे हैं और उसे उड़ाने की कोशिश कर रहे हैं। जब बालकनामा पत्रकार उन बच्चों के पास पहुंचे तो 13 वर्ष की बालिका ने बताया की हमारे पास में ही झुग्गी बस्ती मौजूद है और हम उस झुग्गी में रहते हैं। हम अपनी झुग्गी बस्ती के 200 मीटर की दूरी पर पानी भरने के लिए जाते हैं, एक दिन जब हम पानी भरने के लिए सोच रहे थे तो वहां पर भरी दुपहरी में हमें वहां जाने में धूप के कारण आलस आ रहा था परंतु पानी पीना तो जरूरी है इस कारण पानी लेने जब हम टंकी के पास पहुंचे तो हमने देखा कि वहां पर एक कबूतर बेहोश पड़ा हुआ था और वह बहुत छोटा कबूतर था। हमने उस कबूतर के ऊपर पानी छिड़का और उसे होश में लाने का प्रयास किया तो वह होश में तो आ गया परंतु वह उड़ नहीं पा रहा था जिस कारण हमने अपना पानी भरा और उस कबूतर को उठाकर अपने साथ लेकर अपने घर आ गए। फिलहाल हम रोजाना इस पंछी को दाना-पानी आदि खिलाते हैं और इसे पास के मैदान में लेकर जाते हैं तथा उड़ाने की कोशिश करते हैं ताकि यह उड़ सके परंतु ऐसा नहीं है कि इसे कोई चोट लगी हो परन्तु अभी शायद यह छोटा है इस कारण नहीं उड़ पा रहा है। हमें खुशी है कि हमने एक पंछी को जीवन दिया इतना ही नहीं इससे पहले भी हमें कुछ पंछी और जानवर भी मिले हैं जिनका हमने पालन-पोषण किया है। हमारी इस बस्ती में अन्य कई लोगों को ऐसे पंछी मिले हैं जो की बेहोश हो जाते या उनके चोट लगने के कारण वह गिर जाते हैं तो बस्ती के लोग उन्हें पकड़कर और जिंदा मारकर खा जाते हैं परंतु हमें यह देखकर और सोचकर काफी बुरा लगता है जैसे हम में जान है वैसे ही इन जीवों में भी जान है अतः मेरी यही प्रार्थना है कि कोई इन्हें ना मारे बल्कि इनको बचाने का प्रयास करें।

आवारा कुत्तों ने मचाया आतंक, 5 बच्चों समेत 8 लोगों को काटा

बालकनामा रिपोर्टर आसिफ

पश्चिमी दिल्ली की झुग्गी बस्तियों में आवारा कुत्तों का खतरा इस कदर मंडरा रहा है कि नेहरू कैंप में रहने वाले पांच बच्चों को आवारा कुत्तों ने काट लिया है जिसकी वजह से बच्चों ने स्कूल जाना भी छोड़ दिया है। समुदाय के लोगों ने कई बार इसकी शिकायत एमसीडी में की लेकिन कहीं से भी लोगों को कोई भी राहत नहीं मिल रही है, चेतना संस्था के केंद्र पर पढ़ने वाले तीन बच्चों को भी कुत्तों ने काट लिया है जिसमें से ज्योति जिसकी उम्र 12 साल है वह बताती है कि वह प्रतिदिन कुत्तों को खाने के लिए बिस्कुट या ब्रेड डालती है परंतु हाल ही में जब वह शौचालय जा रही थी तो तभी दो कुत्तों ने उसके ऊपर अचानक से हमला कर दिया जिसमें ज्योति को बहुत चोट आई। ज्योति ने तुरंत जाकर मोती नगर स्थित आचार्य भिक्षु हॉस्पिटल में इंजेक्शन लगवाया जिससे उसे बहुत दर्द हो रहा है, समुदाय में रहने वाले बच्चों के बीच भी कुत्तों के काटने का खतरा बना

हुआ है इसी वजह से बच्चे स्कूल भी नहीं जा रहे हैं। मैं बालकनामा रिपोर्टर आसिफ बालकनामा अखबार के माध्यम से सरकार का ध्यान इस ओर दिलाना चाहूंगा तथा मैं आशा करता हूँ कि पश्चिमी दिल्ली की झुग्गी बस्तियों को जल्द ही आवारा कुत्तों के आतंक से राहत मिलेगी।

बच्चों ने परस्पर मिलकर किया अपनी समस्या का समाधान

बालकनामा रिपोर्टर- चांद

सड़क और कामकाजी बच्चे जो कि आए दिन नई-नई समस्याओं का सामना करते हैं, यूँ तो इन कामकाजी बच्चों का जीवन सरल नहीं होता है बल्कि उन्हें बाकी बच्चों से ज्यादा अपने रहने खाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है, छोटी-छोटी चीजों के लिए भी उन्हें बहुत ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। ऐसे ही संघर्ष को पश्चिमी दिल्ली के सड़क और कामकाजी बच्चे काफी समय से झेल रहे थे, पश्चिमी दिल्ली के लॉरेंस रोड क्षेत्र जहां पर सामने ट्रेन की पटरियां है, उसी के पास में छोटी-छोटी झुग्गियाँ स्थित है, ये बहुत ही तंग गलियां है जिसमें नालियां बनी

हुई है। पहले इन नालियों में कीचड़ भरा हुआ था जो की नालियों से बाहर उफनकर पूरी गलियों में पसरा हुआ था। यहाँ नालियों को कोई भी साफ करने के लिए नहीं आता था, हालाँकि यहाँ आसपास के लोगों ने नगरपालिका निगम वालों को भी कई बार शिकायत भी की लेकिन इन नालियों को साफ करने के लिए वे नहीं आए।

बच्चे इस गंदगी में रहते काफी समय से रहते आए है जिसके कारण बच्चों को आने जाने में काफी दिक्कत होती थी। बच्चों के घरों के बाहर में कीचड़ भरा रहता था जिस कारण बच्चे अपने घरों के अंदर भी नहीं जा पाते थे। बच्चों को अपने घरों के बाहर में बड़े-बड़े पत्थर डालकर अपने घरों के अंदर आना पड़ता है, छोटे बच्चे कई बार इस कीचड़ में गिर भी जाते थे। कीचड़ के कारण बहुत गंदगी हो जाती थी जिस कारण बच्चे बीमार भी होने लगे थे, कीचड़ की बदबू के कारण बच्चों को सांस लेने में दिक्कत होती थी जिस कारण बच्चों को लगा कि उनकी समस्या का कोई भी समाधान नहीं कर रहा है। अंततः बच्चों ने आपस में बातचीत कर अपनी समस्या का खुद हल निकालने के लिए सोचा और बच्चों ने आपस में मिलकर उस कीचड़ को हटाने और साफ-सफाई करने की ठानी, इन बच्चों ने मिलकर वहां दस्ताने पहनकर कीचड़ को हाथों से बाल्टी में भरकर खेतों में फेंककर आए और धीरे-धीरे बच्चों ने मिलकर अपने घरों के बाहर का कीचड़ को साफ किया परिणामस्वरुप अब इन बच्चों को आने-जाने में कोई भी दिक्कत नहीं होती है। इस प्रकार बच्चों ने मिलकर अपनी समस्या का खुद समाधान किया है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

ग्रीष्मकालीन शिविर में कामकाजी बच्चों ने ली भागीदारी

बालकनामा रिपोर्टर : दीपक,
बातूनी रिपोर्टर : आयुष

ग्रीष्मकालीन शिविर एक सुरक्षित और मनोरंजनात्मक शैक्षिक वातावरण प्रदान करने के लिए जाना जाता हैं जहाँ बच्चे नए कौशल सीखते हुए आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं। ग्रीष्मकालीन शिविर एक ऐसी जगह भी है जहां बच्चे विभिन्न प्रकार के सामाजिक कौशल जैसे संचार, शिक्षा एवं रचनात्मकता आदि सीख कर विकसित करते हैं।ग्रीष्मकालीन शिविर बच्चों को नए अवसर तलाशने, नए वातावरण में समय बिताने और नई चीजों को आजमाने का मौका देते हैं जो उनके आत्मविश्वास और स्वतंत्रता को विकसित करने का सबसे अच्छा तरीका है और ये सीख इन बच्चों को जीवन भर मदद करती है। इसी क्रम में

गणेशपुरी कच्ची बस्ती से बालकनामा पत्रकार को जानकारी मिली की सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने पहली बार समर कैंप में भाग लिया है इसलिए समर कैंप के बारे में बच्चों के अनुभव जानने हेतु पत्रकार द्वारा बस्ती का दौरा किया गया और समर कैंप कितने दिन चला, कौन - कौन सी गतिविधियां सिखाई गई और कितने बच्चों ने समर कैंप में भाग लिया? इत्यादि जानकारी जानने के लिए पत्रकार ने बच्चों से बात की तो 9 वर्षीय बालक आयुष ने बताया की इस बार गर्मी की छुट्टियों में बस्ती में संचालित सरकारी विद्यालय में समर कैंप का आयोजन हुआ था जिससे बस्ती के बच्चों को पहली बार समर कैंप में शामिल होने का मौका मिला। इस कैंप में ड्राइंग ,पेंटिंग ,डांस, क्राफ्ट और सेल्फ डिफेंस जैसे अनेक प्रकार की विभिन्न गतिविधियां सिखाई गई। समर कैंप पूरे 1 माह के लिए लगा था लेकिन गर्मी की तेज लहर के कारण 15 दिन बाद समर कैंप को आकस्मात बन्द कर दिया गया। बालक ने बताया की मैने समर कैंप में सेल्फ डिफेंस गतिविधि में भाग लिया क्योंकि आत्मरक्षा न केवल बच्चों को शारीरिक हमलों के खिलाफ खुद का बचाव करना सिखाती है बल्कि यह रोजमर्रा की जिंदगी में आने वाली मुसीबतों का सामना करने में भी मदद करती है। जैसा की हम सब जानते है, नृत्य गतिविधि में कलात्मक और रचनात्मक शक्ति होती है ये शक्ति हमें हमारी भावनाओं को शांत कर बहाव के साथ बहने की प्रेरणा देती है। डांस करते वक्त हमारा शरीर और मन एक साथ एक लय में होता है। इस क्रम में 12 वर्षीय बालिका पूनम बताती है कि उसे डांस करना बहुत अच्छा लगता है और पहली बार एक ऐसी जगह मिली जहां सामूहिक रूप से और बच्चों के साथ भी डांस सीखने का मौका मिला और इस गतिविधि में उसके साथ बस्ती की अन्य लड़कियों ने भी भाग लिया। गर्मी की छुट्टियों में लगे इस समय कैंप में बस्ती से लगभग 25 बच्चों ने अलग-अलग गतिविधियों में भाग लिया।

कामकाजी बच्चों ने बनाया कबाड़ से जुगाड़: अनुपयोगी वस्तुओं को बनाया उपयोगी

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक,
बातूनी रिपोर्टरः हनिफ

कबाड़ से जुगाड़ एक ऐसी कला है जिसके माध्यम से हम अनुपयोगी वस्तुओं को फेंकने के बजाय उनसे कुछ उपयोगी वस्तुएं बना सकते हैं। इस कला से ना केवल हमारी अनुपयोगी वस्तुओं को कचरे आदि में फेंकने से प्रदूषण जैसी समस्याओं से मुक्ति मिलेगी बल्कि उन अनुपयोगी वस्तुओं को किसी उपयोगी उत्पाद में भी बदला जा सकता है जिससे वो काम में लाए जा सके। इसी क्रम में लखेसरा कच्ची बस्ती के सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने कबाड़ से जुगाड़ के माध्यम

से कूलर, सब्जी काटने की मशीन, स्पीकर एवं खेलने हेतु विभिन्न वस्तुएं बनाई। जब बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जयपुर की लखेसरा कच्ची बस्ती का दौरा किया तो 12 वर्षीय बातूनी रिपोर्टर हनिफ ने बताया की मेरा दोस्त अरूण बहुत ही प्रतिभाशाली बालक है और हर समय कुछ नया करता रहता है और इस बार गर्मियों की छुट्टियों में उसने खाली कागज के बॉक्स का डिब्बा, पुरानी मोटर और तार का उपयोग करके उपयोगी वस्तुएं बनाई है। इस बारे में पूरी जानकारी लेने के लिए बालकनामा रिपोर्टर ने बालकअरुण से मुलाकात की तब 8 वर्षीय अरूण ने बताया की मैं हमेशा अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तुएं बनाता हूं और मेरा सपना है की बड़ा होकर इलेक्ट्रॉनिक आइटम बनाने का बड़ा कारखाना बनाऊँ। इस बार दही के खाली डिब्बे, ब्लेड और तार के उपयोग से मिक्सर बनाया है जिससे लहसुन व प्याज काटा जा सकता है और खाली जूस के डिब्बे में सेल एवं मोबाइल की चार्जर प्लेट का उपयोग कर स्पीकर बनाया है। इतना ही नहीं, कागज के खाली बॉक्स, मोटर, तार एवं जूस पीने की नलकी का उपयोग करके कूलर बनाया है। अरूण अपने साथ - साथ बस्ती के अन्य बच्चों को अलग - अलग तरह की वस्तुएं बनाने में सहयोग करता है और इसी क्रम में बच्चों ने खेलने के लिए बंदूक, बोतल, लाइट वाला गुब्बारा और कागज के गत्ते से घर इत्यादि भी बनाए है।

मासिक धर्म जागरूकता अभियान के असर से लड़कियों ने तोड़ी चुप्पी, सीखी स्वास्थ्य की अहमियत

बातूनी रिपोर्टरः सोनिया व शगुफ्ता

आज हम अपने समुदाय की लड़कियों के बारे में बात करेंगे की कैसे ये किशोरियां मासिक धर्म के दौरान आने वाली समस्याओं, चुनौतियों और मिथकों का सामना करती हैं? सड़क और कामकाजी बच्चों का जीवन पहले ही काफी संघर्षमय होता है। वे हर कठिनाई का सामना करने की कोशिश करते हैं, और इन्हीं कोशिशों के तहत एक अहम मुद्दा आता है जिस पर समुदाय के लोग बात करने से कतराते हैं। उन्हें लगता है कि इस पर चर्चा करने से उन्हें शर्मिंदगी होगी और समुदाय में उनके बारे में गलत बातें कही जाएंगी एवं उनके अनुसार मासिक धर्म के मुद्दों पर बात करने से बच्चों के बिगड़ने की संभावना भी बढ़ सकती है। 13 वर्षीय सोनिया और उसकी कुछ सहेलियों ने जून माह में चेतना संस्था द्वारा आयोजित मासिक धर्म पर एक प्रशिक्षण सत्र में भाग लिया। इस सत्र में इन लड़कियों ने मासिक धर्म के दौरान होने वाली समस्याओं पर बातचीत की। कार्यशाला में लड़कियों ने विभिन्न समस्याएं साझा कीं, जैसे मासिक धर्म के दौरान उनके पास पैड बदलने की कोई सुरक्षित जगह नहीं होती है। नजदीकी शौचालय में भीड़ के कारण उन्हें अक्सर लंबे समय तक खड़ा रहना पड़ता है। इसके अलावा, उन्हें इस बात का डर भी रहता है कि शौचालय तक जाते हुए उनके हाथों से सैनेटरी पैड ना गिर जाए। सोनिया और उसकी सहेलियों ने यह भी बताया कि इस सत्र में भाग लेने से पहले उन्हें कई महत्वपूर्ण जानकारी नहीं थी। उन्हें यह नहीं पता था कि पैड को 4 से 5 घंटे के अंतराल में बदलना चाहिए। समुदाय में प्रचलित मिथकों, जैसे अचार को ना छूना, इन दिनों में किसी भी प्रकार का श्रृंगार ना करना, रसोई में खाना ना बनाना आदि के प्रति उनकी सोच बदली है। इसके अलावा, उन्हें मासिक चक्र और मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता के महत्व के बारे में भी जानकारी मिली है। साफ पैड और साफ अंडरगारमेंट्स का महत्व भी समझ में आया है। उन्होंने बताया की हमारे समुदाय और परिवारों में कभी भी

हमसे इस तरह खुलकर किसी ने बात नहीं की और ना ही पूरी जानकारी दी। हमें इस बात पर गर्व है कि हमने चेतना संस्था द्वारा दिए गए सभी सत्रों में भाग लिया। इससे अब हम मासिक धर्म से संबंधित कई जानकारियों के प्रति जागरूक हो गए हैं और हम प्रयास करेंगे कि अपने जैसे अन्य बच्चों को भी जानकारी दें, ताकि वे भी एक स्वस्थ जीवन जी सकें। इसी क्रम में पश्चिम दिल्ली की जखीरा बस्ती निवासी 15 वर्षीय सना ने अपनी व्यक्तिगत संघर्ष की कहानी साझा करके अपने समुदाय में युवा लड़कियों द्वारा झेली जा रही कठिनाइयों पर प्रकाश डाला है। सना ने खुलासा किया कि उसे अपने पिता और भाई से अस्थायी पैड्स का उपयोग करते हुए और अपनी परेशानियों को छिपाते हुए अपने मासिक धर्म को छुपाना पड़ा। पुरुष परिवार के सदस्यों से डर और कलंक के कारण सना की माँ ने उसे मासिक धर्म को एक रहस्य रखने की सलाह दी थी। हालांकि, सना ने साहसिकता से बोलते हुए घोषणा की कि यह समस्या केवल उसके घर तक ही सीमित नहीं है अपितु यह उसके पूरे समुदाय की एक व्यापक समस्या है। समुदाय की महिलाएं और लड़कियां अक्सर अपने मासिक धर्म के दौरान अपने खुद के स्वास्थ्य से अधिक घर के कामों को प्राथमिकता देने के लिए मजबूर होती हैं। वे अस्थायी पैड्स या कपड़े का उपयोग करती हैं, क्योंकि सैनिटरी पैड खरीदना एक विलासिता माना जाता है या वह इन पैड्स को पाने में असक्षम है। सना ने उन घटनाओं को याद किया जब लड़कियों को बाजार से पैड्स तभी खरीदने को कहा गया जब कोई लड़की दुकान की विक्रेता हो। सना की कहानी जखीरा स्लम जैसे पिछड़े समुदायों में मासिक धर्म स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति जागरूकता और समर्थन की अत्यंत आवश्यकता को उजागर करती है। उसका साहस दूसरों को मौन तोड़ने और बदलाव की मांग करने के लिए अवश्य प्रेरित करेगा।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार तथा अभिनव इमिग्रेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471